होली का वास्तविक रहस्य

– ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र हसीजा

भारत में जितने भी त्योहार मनाये जाते हैं, होली उन सभी से विलक्षण है। इसे लोग खूब हास-परिहास के साथ मनाते हैं। होली के दिन हुड़दंग मचा रहता है और लोग एक-दो को गुलाल-अबीर से रंग डालते हैं तथा रात्रि को होलिका जलाते हैं। आखिर इस त्योहार को इस दिन तथा इस रीति से मनाने के पीछे क्या रहस्य है?

पंडित लोग कहते हैं कि भविष्य पुराण में नारद जी ने राजा युधिष्ठिर से होली के संबंध में जो कथा कही, वह इस प्रकार है –

नारद जी बोले – ''हे नराधिप! फाल्गुन की पूर्णिमा को सब मनुष्यों के लिए अभय दान देना चाहिए जिससे समस्त प्रजा भय-रहित होकर हँसे और क्रीड़ा करे। डंडा और लाठी लेकर बालक शूरवीरों की तरह गाँव के बाहर जाकर होली के लिए लकड़ी और कंडों का संचय करें। उस होलिका-दहन, हास-परिहास, खिलखिलाहट और मंत्र उच्चारण से पापात्मा राक्षसी नष्ट हो जाती है। इस व्रत की व्याख्या से (कहानी अनुसार) हिरण्यकश्यप की बहन अर्थात् प्रह्लाद की बुआ, जो प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठी थी, प्रतिवर्ष 'होलिका' नाम से आज तक जलाई जाती है। हे राजन्! होलिका-दहन इत्यादि से संपूर्ण अनिष्टों का नाश होता है .....।''

उपरोक्त कथा-सार को पढ़कर बुद्धिमान लोग समझ सकते हैं कि इसका शब्दार्थ लेना युक्ति-संगत नहीं है बल्कि भावार्थ अथवा लक्षणार्थ लेना ही विवेक-सम्मत है क्योंकि केवल लकड़ी और कंडों के दहन से तो सभी अनिष्टों का नाश हो नहीं सकता, न ही कभी ऐसा हुआ है। वास्तव में तो लकड़ी और कंडे, स्वभाव तथा कर्मों में जो दुख देने वाली आदतें हैं, जो कटुता, शुष्कता, क्रूरता तथा विकार रूपी झाड़-झंखाड़ हैं, उनके प्रतीक हैं और अग्नि 'योगाग्नि' का प्रतीक है। अत: बुरे संस्कारों, नास्तिकता तथा अभिमान रूप होलिका इत्यादि को परमात्मा रूप दिव्य अग्नि की पाप-दह शक्ति में होम कर देना अथवा योगाग्नि में भस्म कर देना ही 'होलिका-दहन' है। इससे मनुष्य के मन में हर्ष और आह्लाद होना स्वाभाविक है; इसलिए यह हास-परिहास का त्योहार माना गया है। 'अभय दान' देने का अर्थ भी यही है कि हम हिंसा, क्रोध, द्वेष इत्यादि से वशीभूत होकर व्यवहार न करें जिससे कि हमसे किसी को भय हो। पुनश्च, सोचने की बात है कि लकड़ी और कंडों को जलाने से तो 'पापात्मा राक्षसी' का नाश नहीं होगा न? 'पापात्मा राक्षसी' तो हमारे मन में बैठी हुई आसुरी वृत्तियों तथा पापजनक कर्मों की ही सूचिका है। अत: हम ज्ञान-रंग से एक-दूसरे को (आत्माओं को) रंगकर, मन के कुभावों तथा कुसंस्कारों का कचरा दग्ध कर दें – यही होली और होलिकोत्सव का वास्तविक रहस्य है।